भूमिका

दो कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन अपने आप में एक विशिष्ट पद्धति है। इस पद्धति में रचना के विविध आयामों पर व्यापक रूप से चर्चा होती है तथा नए निष्कर्ष निकाले जाते हैं। रचनाएँ अपने समय, समाज के दर्शन की उपज होती हैं। रामकृष्ण 'आमिल' का उर्दू ग़ज़ल संग्रह 'साँसों की सरगम' आधुनिक उर्दू साहित्य की एक अमूल्य रचना है, जो नए भावबोध से संपन्न है। वहीं ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपने हिंदी ग़ज़ल संग्रह 'गुफ़्तगू अवाम से है' में समाज की जटिलता को अभिव्यक्त किया है तथा परम्परा व आधुनिकता के बीच पुल का निर्माण किया है। इसलिए हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में 'गुफ़्तगू अवाम से है' ग़ज़ल संग्रह मील का पत्थर सिद्ध हुआ है।

'साँसों की सरगम' और 'गुफ़्तगू अवाम से है' के रचनात्मक मूल्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनका कथ्य भी काफी मिलता-जुलता है। बेशक इनकी भाषा अलग-अलग परन्तु शिल्प कुछ सीमा तक मिलता जुलता है। इन दोनों कृतियों के बीच एक समानता का सूत्र मज़बूती से जुड़ा हुआ है। इसलिए मेरी रोचकता और बढ़ गयी और मैंने अपने एम० फिल० शोध के दौरान इन दोनों कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने लिए सोचा। यह अध्ययन मूलतः कथ्यगत व शिल्पगत आधार पर किया गया है। कथ्य किसी भी रचना का प्राण और शिल्प उसका शरीर होता है। कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए रचनाकार शिल्प की सहायता लेता है।

'साँसों की सरगम' और 'गुफ़्तगू अवाम से है' ग़ज़ल संग्रह आधुनिक उर्दू तथा हिंदी ग़ज़ल की परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनके रचनाकारों ने वर्तमान मानवीय जीवन की विद्रूपताओं, समस्याओं और असंवेदनशीलता को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। ज्ञानप्रकाश विवेक की ग़ज़लों के केंद्र में मनुष्य की उपस्थिति है। उनका 'मैं' समाज की इकाई है और उसका हस्तक्षेप इन ग़ज़लों में प्रतिवाद के रूप में नज़र आता है। प० रामकृष्ण 'आमिल' ने अपनी

ग़ज़लों में 'आमिल' शब्द से अपने साथ-साथ विश्वजन को संबोधित किया है। दोनों ग़ज़लकारों ने मानव जीवन की गहन पीड़ा और संवेदना को अपनी ग़ज़लों में उभारने का सार्थक प्रयत्न किया है।

दोनों ग़ज़लकारों की महत्वपूर्ण कृतियों में आम आदमी केंद्र में है। कुछ जरूरी तथ्यों के सहारे इस लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

'ग़ज़ल की अवधारण' नामक प्रथम अध्याय में 'ग़ज़ल' शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में विचार किया गया है। ग़ज़ल का नाम 'ग़ज़ल' क्यों पड़ा ? ग़ज़ल शब्द भारत में किस प्रकार आया ? इस अध्याय में विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी ग़ज़ल की परिभाषा पर विचार किया गया। भारत में उर्दू ग़ज़ल की परम्परा किस प्रकार विकसित हुई ? हिंदी में ग़ज़ल विधा का अभिग्रहण कैसे हुआ ? आदि विषयों पर विचार किया गया है।

'साँसों की सरगम' एवं 'गुफ़्तगू अवाम से है' में वस्तु-विधान' नामक द्वितीय अध्याय में दोनों ग़ज़लकारों की कृतियों का कथ्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दोनों कृतियों में समाज का चित्रण, मानवीय संवेदना और राजनीतिक चेतना के साम्य-वैषम्य को उजागर किया गया है। प० रामकृष्ण 'आमिल' ने उर्दू ग़ज़ल के माध्यम से एवं ज्ञानप्रकाश विवेक ने हिंदी ग़ज़ल के माध्यम से इन विषयों पर सूक्ष्म चिंतनपरक दृष्टि से लिखा है।

'साँसों की सरगम' एवं 'गुफ़्तगू अवाम से है' का शिल्प-विधान' शीर्षक तृतीय अध्याय में 'साँसों की सरगम' एवं 'गुफ़्तगू अवाम से है' का शिल्प के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें ग़ज़ल की भाषा की विशेषताओं, शे'र, मतला, मक़ता, मिसरा, शब्द भंडार, छंद, प्रतीक और बिंब इत्यादि तत्वों का तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन किया गया है।

चौथे अध्याय में शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किये गयए हैं।

किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए एक प्रेरणा, सहयोग, और दिशा निर्देश की आवश्यकता होती है। मेरे इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में भी मेरे गुरुजनों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। मैं सर्वप्रथम साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष व मेरे शोध निर्देशक एवं मार्गदर्शक प्रो० कृष्ण कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने विषय के चयन से लेकर शोध कार्य में आयी समस्याओं का निवारण किया। वे मुझे निरंतर प्रोत्साहित करते रहे। इसके साथ ही हिंदी और तुलनात्मक विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मुझे सहयोग प्रदान किया।

इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरे माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों का मुझे पूरा सहयोग प्राप्त हुआ जिनका आभार मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। अभिषेक कुमार, शिव कुमार आशीष कुमार और राज कुमार के साथ-साथ अपने अन्य मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने अपने अमूल्य क्षणों में से कुछ समय निकालकर मेरी समस्याओं का समाधान किया। इस लघु शोध-प्रबंध में त्रुटियों का यथा संभव निराकरण करने का प्रयास किया गया है, फिर भी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तो मैं उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

रजनेश कुमार